NH Notes - 05

गठवाला जाटों को मलिक की उपाधि कैसे मिली?

My finding 2 from my recent visit to India:

यह किस्सा मेरे अपने गाँव व् खानदान से जुडी लेन के ज्ञानी विद्वान दादा चौधरी चतर सिंह पुत्र दादा लहरी सिंह जी द्वारा बताया गया है| इन दादा के ज्ञान का लोहा खुद गठवाला खाप के दादा चौधरी भी मान चुके हैं, इसलिए इनके पक्ष को पब्लिक में लाते हुए मुझे कोई झिझक नहीं|

दादा जी के अनुसार बादशाह अकबर के पिता हुमायूँ की 3 रानियां थी, बड़े वाली रानी “मंझा” उर्फ़ हमीदा बेगम थी| जब रानी मंझा उम्मीद से हुई यानि अकबर जब गर्भ में आया तो हुमायूँ पर मुसीबतें टूट पड़ी और ऐसे में गठवाले जाटों के बड़े (जो कि हुमायूँ का मिलनसार था), हुमायूँ पर खतरे को भांप गर्भवती रानी मंझा को दुश्मनों से बचाता हुआ, दूर जंगलों में निकाल ले गया| और दोनों ने जंगल में एक ऋषि के आश्रम में शरण ली| वहीँ गठवाले जाट की सुरक्षा व् साध-संगत के वातावरण में रानी मंझा ने अकबर को जन्म दिया|

जब अकबर बड़ा हुआ और बादशाह बना तो उसने माँ से वो कहानी जाननी चाही, जो रानी मंझा अकबर के जन्म बारे बचपन से उसको बताती आई थी कि उसका जन्म जंगल में हुआ था| विस्तार से जानने पर रानी मंझा ने बताया कि ऐसे-ऐसे फलाने गठवाले जाट का उपकार है हमारे ऊपर, वो ना होते तो ना आज तू होता, ना मैं होती और ना यह विशाल रियासत और राज होता| माता से सारी बात जानकर अकबर ने गठवाला जाटों को भाईचारे का निमंत्रण दिया; और क्योंकि मुस्लिमों के यहां "मलिक" उपाधि सर्वोपरि वीर, रक्षा करने वाले व् हुतात्मा इंसान को दी जाती है, साथ ही इसकी पेशकश गठवाला जाटों को की और इस प्रकार गठवाला जाटों ने बादशाह अकबर से भाईचारा व् 'मलिक' उपाधि स्वीकारी| और तब से गठवाला जाट "गठवाला" के साथ-साथ "मलिक" उपनाम से भी जाने गए|

मेरी विवेचना: दादा का बताया यह तीसरा पक्ष है जो मलिक जाटों को मलिक उपाधि कैसे मिली, बारे मैंने सुना| इससे पहले दो पक्ष और इसके अपने-अपने कारण बताते हैं| जिनमें एक पक्ष माननीय इतिहासविद श्री के. सी. यादव जी का है जिनके अनुसार गठवालों को यह उपाधि पाखंडवाद व् फंडियों को मैदान-ए-युद्ध में हराने की ख़ुशी में उस समय के बादशाह से बराबरी के सम्मान के ऐवज में प्रस्तावित की थी| इस युद्ध में उस समय के बुद्ध अनुयायी 9000 गठवाला जाटों ने एक लाख पाखण्डवादियों से प्रेरित, मार्गदर्शित सेना को अपने 1500 वीरों को खो कर हराया था| और अपने बौद्धत्व के साथ-साथ अपनी स्वछँदता को भी बचाया था|

दूसरा पक्ष पत्रकार व् विख्यात लेखक श्री प्रताप सिंह शास्त्री का है, जो कहता है कि गठवाला जाटों को यह उपाधि तब प्रस्तावित हुई थी जब पृथ्वीराज की मृत्यु के बाद हाँसी के किले पर कब्ज़ा कर देपल रियासत में गठवाला जाटों ने फिर से खुद को स्वतंत्र राज्य घोषित किया| शास्त्री जी के अनुसार

गठवालों के अमर ओजस्वी सिंह सुरमा अमर प्रतापी दादा महाराज जीवन सिंह जाटवान गठवाला के जौहर से यह किस्सा जुड़ा है|

तीनों में से कारण जो भी रहा हो परन्तु एक बात तो स्पष्ट उभर कर आती है कि "मलिक" उपाधि का मिलना दूसरे धर्म के लोगों द्वारा गठवाला जाटों को अपने बराबर/ऊपर का मानना था, क्योंकि अरब साहित्य व् देशों में "मलिक" उपाधि समाज के सर्वोच्च, नेक व् साहसी लोगों के लिए बताई गई है|

सम्भवत: हर जाति-गोत्र-नश्ल के पास उसके इतिहास में ऐसा बहुत कुछ होता है जिसपर वह लोग गर्व कर सकते हैं| ऐसा ही मेरी जाति व् उसमें भी विशेषत: मेरे गोत्र का यह एक किस्सा है|

अपने बुजुर्गों के पास बैठिये और आपके अपने इतिहास के ऐसे अनकहे-अनसुने पन्ने जानिए कि जिनको जाने बिना शायद आपका मान-सम्मान और अभिमान जीवनभर अधूरा है| यकीन मानिए यह ऐसे पन्ने होते है जो ना किसी ग्रन्थ में मिलेंगे ना किसी पुराण में और ना ही किसी मोल की कलम वाले की लेखनी में|

Author: Phool Kumar Malik
Publisher: Nidana Heights
Dated: 06/11/2014